



# प्रतियोगिता दर्पण

हिन्दी मासिक

वर्ष 40

सप्तम् अंक

फरवरी 2018

## इस अंक में...

- 11 विवेकी व्यक्ति वर्तमान में जीता है
- 13 राष्ट्रीय घटनाक्रम
- 21 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
- 26 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
- 32 नवीनतम सामान्य ज्ञान
- 42 खेलकूद
- 46 रोजगार समाचार
- 49 भारतीय राज व्यवस्था : एक दृष्टि में
- 55 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
- 58 वर्ष 2017 में सम्मन विभिन्न सैन्य अभ्यास
- 60 युवा प्रतिभाएं
- 70 स्मरणीय तथ्य
- 73 फोकस—पिछड़े जिलों के विकास हेतु पहल
- 77 विश्व परिदृश्य
- 81 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
- 83 बैंकिंग लेख—(i) भारतीय बैंकों में गैर-निष्पादक परिसम्पत्तियाँ (एनपीए) : स्वरूप और सम्भावनाएं
- 87 (ii) भारत को विनिर्माण केन्द्र के रूप में परिवर्तित करने में मुद्रा योजना की भूमिका
- 88 विधि लेख—बाल-विवाह से सम्बन्धित कानून एवं नीतियाँ
- 107 ऐतिहासिक लेख—ओडिशा के 'पाइक विद्रोह' को प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का दर्जा देने की पहल
- 108 समसामयिक लेख—स्वदेशी चिन्तन व इसकी समसामयिक प्रासंगिकता
- 110 सामाजिक लेख—भारत में पिछड़े वर्गों का विकास एवं आयोग
- 113 संवैधानिक लेख—भारत में विभिन्न वंचित/लक्षित समुदायों के लिए गठित आयोग
- 115 पर्यावरणीय लेख—कृषि विकास एवं पर्यावरण अवनयन
- 117 कृषि लेख—देश के विकास में किसान और कृषि की महत्ता जानिए
- 119 सार संग्रह
- 124 सामान्य अध्ययन—सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2016
- 131 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान—(i) सम्मिलित रक्षा सेवा परीक्षा, 2017 (II)
- 141 (ii) संघ लोक सेवा आयोग केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल सहायक कमाण्डेंट परीक्षा, 2017
- 153 (iii) जी.आई.सी. ऑफिसर ग्रेड परीक्षा, 2017
- 154 (iv) नाबार्ड ग्रेड—बी ऑफिसर परीक्षा, 2017
- 155 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
- 157 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
- 159 ऐच्छिक विषय—(i) इतिहास-नवोदय विद्यालय समिति पी.जी.टी. परीक्षा, 2016
- 165 गृह विज्ञान—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
- 173 तर्कशक्ति—आई.बी.पी.एस. कृषि अधिकारी परीक्षा, 2017
- 180 संख्यात्मक अभियोग्यता—नेशनल इश्योरेंस कं. लि. ए. ओ. परीक्षा, 2017
- 184 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
- 187 क्या आप जानते हैं ?
- 188 अपना ज्ञान बढ़ाइए
- 189 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—असाधारण सफलता सर्वोत्तम प्रतिशोध
- 191 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-463 का परिणाम
- 192 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक-183

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in



# विवेकी व्यक्ति वर्तमान में जीता है

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

“यदि आप प्रसन्न रहना चाहते हैं, तो विगत के बारे में न सोचें, भविष्य के बारे में चिंतित न हों, पूरी तरह से वर्तमान में जीने पर केन्द्रित हों।”

— रॉय टी. बेन्नेट

जीवन जीने के तरीके में ही सब कुछ समाया है. अगर आप विवेकी हैं अर्थात् अच्छे और बुरे के बीच अन्तर कर सकने की सामर्थ्य रखते हैं, तो निश्चित है कि आप वर्तमान को जियेंगे, किन्तु यदि आप अविवेकी हैं, नासमझ हैं तो सदा भूत और भविष्य को सोचते हुए वर्तमान समय को बर्बाद करते रहेंगे.

'समय' क्षण भर है, वर्तमान ही है, भूत व भविष्य हमारी मन की संकल्पना मात्र है, जिसे हम भोग चुके हैं, वह भूत है. भूत वह है, जो जाना जा चुका है. भोगा जा चुका है. जिसे दुबारा भोगना अशक्य है. उसे मात्र यादों में ही मिला जा सकता है. इसी प्रकार भविष्य क्या है ? वह भी भोगे जा चुके क्षण में उभरे चित्ती प्रभाव हैं, जिन्हें हमारे मन ने संजो कर रख लिया. मन में मौजूद हर राग-द्वेषमय विचार भविष्य को निर्मित करते चले जाते हैं. जितना-जितना हमारा मन विकार युक्त रहता है, अशांत व बेचैन रहता है, उतना-उतना भविष्य का निर्माण भी करता रहता है. बिखरा-बिखरा चित्त यानि भूत व भावी की यात्रा एवं शांत चित्त यानि वर्तमान का जीवन. शांत चित्त ही वर्तमान को जी सकता है, अशांत कदापि नहीं. इस प्रकार हम कह सकते हैं कि—विवेकी वह जो शांत व समझदार हैं और वर्तमान में जीता है तथा अविवेकी वह, जो अशांत, बेचैन, नादान व बिखरे चित्त वाला है.

आप और हम, जीवन के चाहे किसी भी क्षेत्र से क्यों न जुड़े हों, अपनी प्राइवेट लाइफ, प्रोफेशनल लाइफ व पब्लिक लाइफ तीनों में संतुलन बनाकर जीना चाहते हैं, तीनों में समृद्धि व शांति चाहते हैं तो क्यों न हम वर्तमान समय को ही प्रधानता दें, Value देवें और भूत-भावी का गैर जरूरी चिंतन छोड़ देवें. इसके लिए संभव है हमें कुछ अभ्यास करना पड़े जैसे कि मन को फेरना.

जब कोई व्यक्ति अतीत की स्मृतियों—अच्छी या बुरी पर आत्मकेन्द्रित होकर जीता है तो वह अपने वर्तमान में प्रयुक्त किए जा

